हर्षि केशलाल
मनोविज्ञान विभाग

एक भारत श्रेष्ठ भारत

एक सूर्य है, एक गगन है
एक ही धरती माता
दया करो प्रभु एक बनें सब,
सबका एक से नाता

पंडित नरेन्द्र शर्मा.

इन गीतों में हमें प्राकृतिक सौन्दर्य, देशभक्ति तथा भारतीय संस्कृति की गौरवपूर्ण झलक दिखाई देती है।

प्राकृतिक अनुराग और प्रकृति संरक्षण की चिरंतन, शाश्वत धारा है भारतीय संस्कृति। प्राकृतिक अनुराग हमारी पुरातन संस्कृति में इस कदर रचा-बसा है कि हम प्रकृति से अपने जुदा अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते। सच भी है, हम प्रकृति के अनिवार्य और अविभाज्य अंग हैं। हम प्रकृति से और प्रकृति हम से जुदा रह नहीं सकते।

[illegible] वायु को प्राण की संज्ञा [illegible] है प्राण।" (प्रश्न [illegible]

[illegible] प्राणियों में [illegible] करता है।

[illegible] से आदि [illegible] पनपा, इनमें [illegible] जीवन का संचार किया [illegible] प्रकृति रही है।

[illegible] से ऊर्जा लेकर अपना वनस्पति [illegible] हैं और इन्हीं से अन्य आहार [illegible] अपना भरण-पोषण करते हैं। [illegible] उपनिषद में वायु में दैवीय शक्ति की अवधारणा निहित है। वायु ही प्राण बनकर शरीर में वास करता है।

वेदों में वायु को भेषज गुणों से युक्त माना गया है।

Ajanta Officer

(आ वात वाहि भेषजं गुणों से युक्त माना गया)

"आ वात वाहि भेषजं विवात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥"
(ऋक. 137/3).

अर्थात - हे वायु। अपनी औषधि ले आओ और यहाँ से सब दोष दूर करो, क्योंकि तुम ही सब औषधियों से युक्त हो।

भारतीय संस्कृति में जल को भी देवता माना गया है। सरिताओं को भी जीवनदायिनी कहा गया है, कदाचित इसी नाते आदि संस्कृतियां सरिताओं के किनारे उपजीं, बसीं और वहीं से विस्तार पाती गयीं।

गंगा हमारे लिए मात्र नदी नहीं है, अपितु भारतीय संस्कृति की संवाहिनी भी है। गंगा अंतःसलिला है, उसका वास हमारे हृदय में है। वह पुण्यतोया है, अतः पापहारिणी भी। ऐसा शास्त्रोक्त मत है।

हमारी भारतीय संस्कृति में वृक्षों को भी देवता माना गया है। हमारे महान आयुर्विज्ञानियों की धारणा है कि संसार में ऐसी कोई वनस्पति नहीं जो अभेषज्य हो। संभवतः इसी नाते वृक्षों को वंदनीय कहा गया है।

भारत में शाश्वत शिक्षा हर माता-पिता की जिम्मेदारी और बच्चों का अधिकार है। राज्य द्वारा प्रायोजित शिक्षा निःशुल्क दी जाती है और सभी को उपलब्ध है। मध्याह्न भोजन के जरिये बच्चों को खाद्य सुरक्षा दी जाती है। संघ सरकार और राज्य सरकारें प्राइमरी शिक्षा को अपनी बुनियादी जिम्मेदारी मानती हैं। बालश्रम को सरकारी तौर पर गैरकानूनी करार दिया जा चुका है। अनेक राज्यों में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा भी निःशुल्क कर दी गई है। लगभग सभी राज्यों में अनुसूचित जाति और

(आ वात वाहि भेषजं गुणों से युक्त माना)x गया)x

"आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रप: ।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥"
(ऋक. 137/3).

अर्थात - हे वायु ! अपनी औषधि ले आओ और यहाँ से सब दोष दूर करो, क्योंकि तुम ही सब औषधियों से युक्त हो ।

भारतीय संस्कृति में जल को भी देवता माना गया है। सरिताओं को भी जीवनदायिनी कहा गया है, कदाचित इसी नाते आदि संस्कृतियां सरिताओं के किनारे उपजीं, बसीं और वहीं से विस्तार पाती गयीं।

गंगा हमारे लिए मात्र नदी नहीं है अपितु भारतीय संस्कृति की संवाहिनी भी है। गंगा अंत:सलिला है, उसका वास हमारे हृदय में है। वह पुण्यतोया है, अत: पापहारिणी भी। ऐसा शास्त्रोक्त मत है।

हमारी भारतीय संस्कृति में वृक्षों को भी देवता माना गया है। हमारे महान आयुर्विज्ञानियों की धारणा है कि संसार में ऐसी कोई वनस्पति नहीं, जो अभैषज्य हो। संभवत: इसी नाते वृक्षों को वंदनीय कहा गया है।

भारत में शाश्वत शिक्षा हर माता-पिता की जिम्मेदारी और बच्चों का अधिकार है। राज्य द्वारा आयोजित शिक्षा नि:शुल्क दी जाती है और सभी को उपलब्ध है। मध्याह्न भोजन के जरिये बच्चों को खाद्य सुरक्षा दी जाती है। संघ सरकार और राज्य सरकारें प्राइमरी शिक्षा को अपनी बुनियादी जिम्मेदारी मानती हैं। बालश्रम को सरकारी तौर पर गैरकानूनी करार दिया जा चुका है। अनेक राज्यों में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा भी नि:शुल्क कर दी गई है। लगभग सभी राज्यों में अनुसूचित जाति और

अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों के बच्चों के लिए शिक्षण संस्थानों में आरक्षण का प्रावधान है।

भारतीय राज्य 50 भारतीय भाषाओं में प्राइमरी शिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं। इन स्कूलों में कई विदेशी भाषाएँ भी पढ़ाई जाती हैं। वयस्क शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया जाता है। सभी सूचीबद्ध भाषाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे शिक्षा कार्यक्रमों में संवैधानिक गारंटी अंतर्निहित होती है। भारतीय भाषाओं के केंद्रीय संस्थान को ऐसी भाषाओं में शिक्षा सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इन प्रयासों के बावजूद अनेक वंचित भाषाएँ हैं जिनको उन्हें बरकरार रखने के लिए शिक्षा सामग्री तैयार नहीं की जा रही है। बच्चे [illegible] में [illegible] स्कूलों में जाते हैं जहाँ [illegible] सिर्फ इसलिए [illegible] स्कूलों में शिक्षा का [illegible] है। इन परिस्थितियों के [illegible] भाषा के संरक्षण [illegible] संरक्षण की जरूरत है बेमानी [illegible]

[illegible] भाषा का सृजन करने में सैकड़ों [illegible] है। मानव समुदायों द्वारा [illegible] भाषाएँ सामूहिक [illegible] विरासत का एक हिस्सा है। इसलिए यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम किसी भी प्रांत के हों, किसी भी भाषा का हों, हम सभी भारतीय हैं।

निष्कर्ष :— (1) हम प्रकृति से और प्रकृति हम से जुदा नहीं रह सकते। वर्तमान सरकारें भी जल, जीवन और

अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों के बच्चों के लिए शिक्षण संस्थानों में आरक्षण का प्रावधान है।

भारतीय राज्य 50 भारतीय भाषाओं में प्राइमरी शिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं। इन स्कूलों में कई विदेशी भाषाएँ भी पढ़ाई जाती हैं। वयस्क शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया जाता है। सभी सूचीबद्ध भाषाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे शिक्षा कार्यक्रमों में संवैधानिक गारंटी अंतर्निहित होती है। भारतीय भाषाओं के केंद्रीय संस्थान को ऐसी भाषाओं में शिक्षा सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

इन प्रयासों के बावजूद अनेक वंचित भाषाएँ हैं जिनमें उन्हें बरकरार रखने के लिए शिक्षा सामग्री तैयार नहीं की जा रही है। बड़ी संख्या में बच्चे ऐसे स्कूलों में जाते हैं जहाँ उनसे अधिक फीस सिर्फ इसलिए वसूली जाती है कि उन स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इन परिस्थितियों के अंतर्गत किसी ऐसी भाषा के संरक्षण की बात, जिसे संरक्षण की जरूरत है बेमानी हो जाती है।

एक भाषा का सृजन करने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं। मानव समुदायों द्वारा सृजित सभी भाषाएँ सामूहिक सांस्कृतिक विरासत का एक हिस्सा हैं। इसीलिए यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम किसी भी प्रांत के हों, किसी भी भाषा का हों, हम सभी भारतीय हैं।

निष्कर्ष :— (1) हम प्रकृति से और प्रकृति हम से जुदा नहीं रह सकते। वर्तमान सरकारें भी जल, जीवन और

हरियाली पर विशेष ध्यान दे रही है।

(ii) प्रादेशिक भाषाओं का भी ध्यान रखना चाहिए, जिससे हमारी संस्कृति को बचाया जा सके।

(iii) प्रकृति सूर्य, वायु, जल हमारे साथ कभी भेदभाव नहीं करते तो हम मनुष्य, मनुष्य से क्यों भेदभाव करें।

(iv) "मिले सुर मेरा तुम्हारा
तो सुर बने हमारा"

हम सभी भारतीय हैं
"एक भारत श्रेष्ठ भारत है।"

~~संदर्भ : फिल्म सत्यम सुन्दरम~~

संदर्भ : (i) फिल्म :- सत्यम शिवम सुन्दरम
(ii) योजना – जून 2014 – 51
(iii) योजना :- सितंबर 2013 – 30.

Hrishi Kesh lal
Deptt - Psychology

संसाधनों पर विशेष ध्यान दे रही है।

(ii) प्रादेशिक भाषाओं का भी ध्यान रखना चाहिए, जिससे हमारी संस्कृति को बचाया जा सके।

(iii) प्रकृति सूर्य, वायु, जल हमारे साथ कभी भेदभाव नहीं करती तो हम मनुष्य, मनुष्य से क्यों भेदभाव करें।

(iv) "मिले सुर मेरा तुम्हारा
तो सुर बने हमारा।"

हम सभी भारतीय हैं,
"एक भारत श्रेष्ठ भारत" हैं।

~~संदर्भ :- फिल्म - सत्यम सुन्दरम~~

संदर्भ :- फिल्म :- सत्यम शिवम सुन्दरम

(ii) योजना — जून 2014 — 51

(iii) योजना :- दिसंबर 2013 — 30.

Hrishi Kesh Lal

Deptt. Psychology.

हरि केश लाल
मनोविज्ञान विभाग

एक भारत श्रेष्ठ भारत

एक सूर्य है, एक गगन है
एक ही धरती माता
दया करो प्रभु एक बनें सब,
सबका ~~सब~~ एक से नाता

पंडित नरेन्द्र शर्मा.

इन गीतों में हमें प्राकृतिक सौन्दर्य, देशभक्ति तथा भारतीय संस्कृति की गौरवपूर्ण झलक दिखाई देती है।

प्राकृतिक अनुराग और प्रकृति संरक्षण की चिरंतन, शाश्वत धारा है भारतीय संस्कृति। प्राकृतिक अनुराग हमारी पुरातन संस्कृति में इस कदर रचा-बसा है कि हम प्रकृति से अपने पृथक अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते। सच यही है, हम प्रकृति के अनिवार्य और अविभाज्य अंग हैं। हम प्रकृति से और प्रकृति हम से जुदा रह नहीं सकते।

[illegible] में वायु को प्राण की संज्ञा [illegible] है प्राण।" (प्रश्न [illegible]) [illegible] प्राणियों में [illegible] संचार करता है। [illegible] से [illegible] पनपा, इनमें [illegible] जीवन का संचार किया [illegible] न्यारी है [illegible] से ऊर्जा लेकर अपना [illegible] और इन्हीं से [illegible] आहार [illegible] अपना भरण-पोषण करते हैं। [illegible] उपनिषदों में वायु में दैवीय शक्ति निहित है। वायु ही प्राण बनकर [illegible] की अवधारणा [illegible] शरीर में वास करता है।

वेदों में वायु को भेषज गुणों से युक्त माना गया है।

Officer